कुमार विकल और उनकी काव्य–भाषा

डॉ. रजनी प्रताप

कुमार विकल का परिचय

कुमार विकल का जन्म 1935 में वजीरबाद, गुजरात, जोकि वर्तमान पाकिस्तान में है, में हुआ। वे 1970 के दशक के बहुचर्चित रचनाकार माने जाते हैं। हिन्दी साहित्य में कुमार विकल की कविताएं समकालीन जीवन की विसंगतियों एवं विवशता से मुक्त है। वे क्रांति एवं बदलाव के कवि हैं। उनकी कविताओं में राजनीतिक चेतना का स्वर सुनाई देता है, क्योंकि वह राजनीतिक मोह–भंग के काल की कवि हैं। उनकी काव्य–चेतना जनवादी मूल्यों से अनुप्रेरित है।

कुमार विकल का कृतित्व

कुमार विकल का काव्य जहां मध्यवर्गीय जीवन के स्वभाव, इच्छाओं, अभिलाषाओं, आशाओं–निराशाओं आदि को चित्रांकित करता है, वहीं समाज के उच्च वर्ग की विलासिता और अभिजात्य प्रवृत्ति के यथार्थ को रेखांकित करता है। इसके अतिरिक्त कुमार की कविताओं में पंजाब की गंध भी है और लोक–संस्कृति के प्रति आग्रह भी है। जीवन के भरे–पूरे चित्र भी उनकी कविता में देखने को मिलते हैं। उनके अभी तक तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं :–

1. एक छोटी की लड़ाई, 1980
2. रंग खतरे में, 1987
3. निरुपमा दत्त मैं उदास हूं, 1993

कुमार विकल का भाषा–वैशिष्ट्य

- शब्द योजना
- बिम्ब–विधान
- प्रतीक–योजना
- मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग
- वाक्यों की पुर्नावृत्ति
- व्यंग्यात्मकता

शब्द योजना

तत्सम शब्द :– हिमशिला, प्रक्रिया, वनतंत्र, गंध, वेगवती, वर्जना आदि

तद्भव शब्द :– नंगा, दरवाज़ा, हाथ, दोस्त, चीज, फौजी आदि

देशज शब्द :– दनदनाता, खिलंदड़ी

विदेशी शब्द :– बॉस, कॉफी हाउस, चार्जशीट, मुअत्तिल, अर्जी, मशक्कत

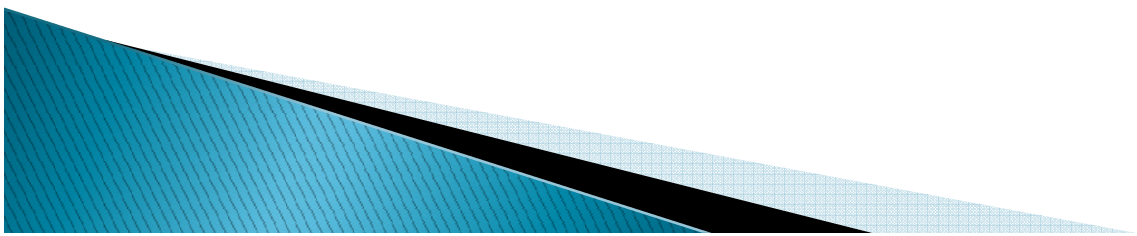

बिम्ब–विधान

बिम्बों के मुख्य प्रकार जो विकल की कविता में मिलते हैं :–

- ऐन्द्रिय बिम्ब :– अर्थात् यह वह बिम्ब हैं जो मानव की छः इन्द्रियों के आधार पर निर्मित होते हैं जैसे– चाक्षुष, श्रव्य या नादात्मक, स्पर्श्य, घ्रातव्य, आस्वाद्य

अब खेतों से पकी हुई फसलों की गंध नहीं आएगी

बल्कि एक बदबू–सी उठकर

नगरों–ग्रामों

गली–मुहल्लों

घर–आंगन

देहरी–दरवाज़ों तक फैल जाएगी

इन पंक्तियों में घ्रातव्य बिम्ब (सूंघकर) की झलक दिखाई देती है

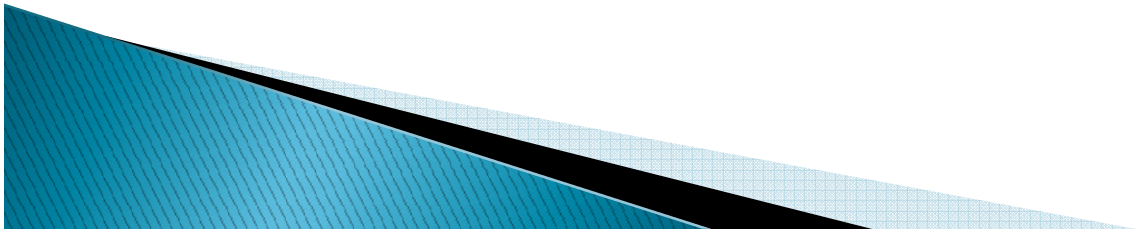

बिम्ब–विधान

- स्मृति बिम्ब :– यह वह बिम्ब हैं, जो रचनाकार की स्मृतियों पर आधारित होते हैं। कुमार विकल की कविताओं में इस प्रकार के बिम्ब भी मिलते हैं

उदाहरण :–

मेरी मां का चेहरा
गोर्की की 'मां' से मिलता है
और अब भी उसका खुरदरा हाथ
कुछ इस तरह हिलता है
कि जैसे दिन भर की मशक्कत के बाद
वह, 'त्रिंजन' में कोई लोकगीत गा रही हो

यहां रचनाकार अपनी मां की स्मृतियों को आधार बनाकर उस वातावरण का शब्द–चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता हुआ दिखाई देता है।

प्रतीक–योजना

- कुमार विकल की कविताओं में कई शब्द अपने सामान्य अर्थों की अपेक्षा विशिष्ट अर्थों में प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे अंधेरी गुफा, खूनी नदी, जंगल, ठंडे घर, कच्ची रोटियां, अस्पताल, काला पहाड़ आदि शब्द अपने सामान्य अर्थों के अपेक्षा परिस्थिति अनुरूप विशेष अर्थों को द्योतित करते हैं। उदाहरण :–

एक डरा हुआ आदमी जब अस्पतालों में भटकता है
तो डाक्टरों की मौखिक सहानुभूति
या ट्रेंक्वालयज़र्स की बैसाखियां ले के लौटता है।

इन पंक्तियों में 'अस्पताल' सामान्य अस्पताल के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ, अपितु यहां अस्पताल विकृत सामाजिक स्थितियों को ठीक करने वाली संस्था का प्रतीक है।